जलामृत

प्रो. श्याम लाल कौशल

पात्र-परिचय

शकुंतला	:	**मां (परिवार की मुखिया)**
कलिया	:	**बाई**
चंचल	:	**बेटी**
सतीश	:	**दामाद**
वीना	:	**पड़ोसन**
कृष्णा	:	**पड़ोसन**
सुमित्रा	:	**पड़ोसन**

शकुन्तला : (नौकरानी, कलिया को पुकारते हुए) कलिया, अरी कलिया.... तू कहां है?

कलिया : यहां मां जी। (तेजी से आती है)

शकुन्तला : तू, कहां गुम हो गई थी?

कलिया : मां जी, मैं ऊपर चौबारा साफ कर रही थी। आपने कहा था, आपकी बेटी, चंचल आज आ रही है।

शकुन्तला : हां, अभी-अभी उसका मोबाइल फोन पर संदेश आया है कि वह अभी पहुंचने वाली है।

कलिया : मां जी, लगता है कि आपको अपनी बेटी, चंचल से बहुत प्यार है?

शकुन्तला : हां, कलिया। मेरी एक ही तो बेटी है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह शादी के दो साल बाद मायके आ रही है।

कलिया : अच्छा मां जी, छोटी बीबी जी की शादी कहां हुई है, उसके आदमी क्या करते हैं?

शकुंतला : कलिया, मेरी बेटी बहुत पढ़ी लिखी तो है नहीं, सिर्फ 12 क्लास ही पास है। उसकी शादी राजस्थान के राम किसान परिवार में हुई है।

कलिया: फिर तो बड़े मजे होंगी।

शकुन्तला : लेकिन मेरी बेटी के ससुराल वाले हैं बहुत अच्छे। वहां सब चीजों की मौज है। राजस्थान का गांव है तो पानी की तनिक दिक्कत रहती है। (उत्साह से वह द्वार खोलती है तो उसका दामाद सतीश आगे बढ़कर उसके पांव छूता है और चंचल उसके गले लग जाती है। कलिया की सहायता से सामान उठवाकर उन्हें ड्राइंग-रूम में लिवा लाती है अपनी अटैची उठाकर चंचल स्नान करने चली जाती है)

चंचल : अच्छा, मां मैं अभी नहाकर आती हूं। रमेश... ... पहले ही नहा चुके हैं। फिर हम सब इकट्ठे ही नाश्ता करेंगे।

चंचल : मां, पिता जी, सवेरे-सवेरे काम पर चले गये?

शकुन्तला : हां, उन्हें फैक्टरी में जल्दी जाना था।

चंचल : मां ओ मां..... (चंचल, बाथरूप से आवाज लगाती है।)

शकुन्तला : (बाथरूम के पास आकर) कहो बेटी क्या चाहिए।

चंचल : हद ही हो गयी मां, अपने बाथरूम की सभी टोंटियां लीक कर रही हैं। यहां का फ्लस भी लीक कर रहा है ..... ओफ कितना पानी बर्बाद होता है। पाइप फिटिंग वाले को बुलवाकर ठीक क्यों नहीं कराया....।

शकुन्तला : घबरा मत बेटी, अब तू अपनी मां के घर में है और यहां पानी की कोई कमी नहीं है.....

चंचल : नहीं मां यह कोई छोटी बात नहीं। हमारे ससुराल में तो पानी की बहुत किल्लत है। दो कोस पैदल चल कर कुएं से पानी लाना पड़ता है। वहां भी ..... मारा-मारी होती है। कई बार तो खून खराबा हो जाता है ....।

शकुन्तला : अच्छा, इतनी दिक्कत, तुमने कभी टेलीफोन पर बताया ही नहीं।

चंचल : मैं अपनी परेशानी तुम्हें बताकर क्या परेशान करती। हमारे वहां तो लगभग सारा साल पीने के पानी का अकाल पड़ा रहता है। पीने के पानी को बाहर टैंकों में भरकर रखते हैं जिससे कई बार पानी चोर निकाल ले जाते हैं।

शकुन्तला : आप नहाते धोते तथा सफाई कैसे करते हो?

चंचल : हम सप्ताह में केवल एक बार नहाते धोते हैं। हम बरसात के पानी को इकट्ठा कर लेते हैं, उसी से कपड़े धोते हैं, साफ सफाई करते हैं नहाने वाले पानी को भी हम एकत्रित करके अपने बगीचे में डाल लेते हैं। बात करते-करते अपने बाल झटकती चंचल बाथरूम से बाहर आ जाती है। (कलिया ने नाश्ता डाइनिंग टेबल पर लगा दिया है। सब टेबल के आस-पास बैठ जाते हैं)

शकुन्तला : पानी की इतनी परेशानी है तो सरकार इसके बारे में कुछ नहीं करती?

चंचल : सरकार समय-समय पर पीने के पानी के टैंकर भेजती है, उससे तो सभी घरों को एक-एक, दो-दो बाल्टी पीने के लिए मिलती है। मैं विवाह के बाद ससुराल गई तो पानी की कमी के कारण मुझे बहुत बार रोना आ जाता था। मैं सोचती थी कि मेरे घर वालों ने मुझे..... सज़ा भुगतने भेज दिया है।

शकुन्तला : मुझे क्या पता था, बेटी।

चंचल : अब तो मेरी पानी की कमी के हालात में वैसी ही आदत बन गयी है। हमारा मोहल्ला तो गांव के बड़े लोगों का इलाका है जो अपने यहां पानी बिजली की कमी नहीं होने देते।

शकुन्तला : बेटा, मैं तो अनपढ़ और घर में ही रहने वाली, मुझे बाहर की दुनिया का क्या पता?

चंचल : हमारे गांव में ऊंचाई वाले इलाके हैं, सरकारी पाईपों से पानी भेजा जाता है।

शकुन्तला : हमारी बाई भी कल कह रही थी कि उनके मोहल्ले में चार दिन से पानी नहीं आया।

चंचल : यह तो तब है जब हम ऐसे मोहल्ले में रहते हैं जहां हमारे गांव की तरह पानी की किल्लत नहीं। अगर हमने पानी को किफायत और समझदारी से इस्तेमाल नहीं किया तो हम आने वाले समय में पानी की एक-एक बूंद को तरस जाएंगे।

शकुन्तला : सचमुच चंचल यह तो बहुत चिंता की बात है। पानी तो बहुत आवश्यक वस्तु है। इसके बिना तो हम एक दिन भी जिंदा नहीं रह सकते। हमारे इलाके में पानी की मौज है इसलिए हम इसकी बर्बादी पर ध्यान नहीं देते....।

चंचल : मां हमारे पास कितना भी पानी हो, यदि हम उसकी, एक बूंद भी बेकार करते हैं तो यह महापाप है क्योंकि हम दूसरे लोगों के हिस्से का पानी बर्बाद करते हैं तो ईश्वर भी हमसे नाराज होता है।

शकुन्तला : चंचल बेटा.... बात तो तुम्हारी एकदम ठीक है। हमारे धर्मशास्त्रों में भी जल को वरूण देवता कहा गया है। अब तो मेरी लाडो बहुत स्यानी हो गयी है ..... बड़ी-बड़ी बातें करने लगी है परन्तु हमारे अकेले से क्या फर्क पड़ेगा।

चंचल : मां हमें यह बातें सबको बतानी हैं।

शकुन्तला : ठीक है बेटी कल, हमारे घर में सत्संग है तुम सबको ये बातें समझा देना।

चंचल : ठीक है मां...

(नाश्ता करके सब टेबल से उठ जाते हैं)

(कृष्ण जी, कृष्ण जी म्हारे खेतों में जल बरसा दे.....। सभी औरतें मिलकर शकुन्तला के घर पर भजन कर रही हैं)

चंचल : मेरी चाची, ताई, भाभी और दादियों सबको मेरी राम राम। जिस पानी को आप अपने खेतों के लिए कृष्ण जी से मांग रही हो इसका बहुत महत्व है। आपने सुन रखा है ना जल ही जीवन है।

वीना : चंचल बेटी अपने मोहल्ले में तो कोई परेशानी नहीं। कई बार तो खाली ठूठी चलती रहती है।

चंचल : हमारे यहां तो हर दिन पानी की तंगी होने लगी है, यह आगे और भी खतरनाक हो सकती है। हमारे गांव जैसे हालात देश के सभी भागों में हो

सकते हैं।

कृष्णा : तो हम क्या कर सकते हैं?

चंचल : हम गृहणियों का घर गृहस्थी में अहम रोल होता है। हम सभी अपने-अपने तरीके से पानी की बचत करें तो बहुत फर्क पड़ जायेगा।

वीना : और जो सीवर का पानी पीने के पाईपों में आता है?

चंचल : हम लोगों को इसके बारे में भी समय-समय पर सरकार को बताते रहना चाहिए।

कृष्णा : हमें अपने बच्चों के जन्म दिन पर एक पेड़ लगाना चाहिए। पेड़ से वातावरण संतुलित होगा, बरसात समय पर आएगी तथा पेड़ बरसात के पानी को अपनी जड़ों में..... लेगें, बाढ़ तो रूकेगी ही, जमीन का जलस्तर ऊपर आ जायेगा।

चंचल : आपका यह सुझाव बहुत अच्छा है। हम अपने गांव में पानी की किल्लत के कारण बहुत परेशान रहते थे, हमने तो इस समस्या को लगभग हल कर लिया है। इससे पहले कि वह समस्या सारे देश में फैल जाये, हमें समय रहते कदम उठाना चाहिए।

वीना : तो हमें क्या करना चाहिए।

चंचल : मुझे तो कुछ दिनों के बाद अपने ससुराल वापिस जाना है। इस बीच हम मोहल्ले की औरतें तथा आदमी मीटिंग करें, उसमें पानी बचाने, पेड़ लगाने, सीवर तथा पानी के पाईपों का ठीक रखने आदि पर विचार किया जाये।

सुमित्रा : बेटी, तुम ठीक कह रही हो, मेरा विचार है कि हमें पानी को लेकर जागरूकता पैदा करने के

लिए समय-समय पर प्रभात फेरियां निकालनी चाहिये। प्रभात फेरियों में हम बैनरों पर लिखवा कर यह नारा लगायेंगें 'जल ही जीवन है' 'जल है तो कल है। हमें यह संदेश स्कूलों, दफ्तरों, गांवों में पहुंचाना होगा।

चंचल : जल संरक्षण को लेकर हमारा यह प्रयास है, कल को इसकी खबर राज्यों, टीवी तथा सरकारी विभागों में पहुंचेगी। मैंने रेडियो, टीवी पर यह सुना है कि आने वाले समय में पानी को लेकर तीसरा विश्व युद्ध हो सकता है।

सुमित्रा : युद्ध क्यों होगा?

चंचल : जब पानी नहीं मिलेगा तो इसे प्राप्त करने के लिए युद्ध तो होगा ही।

वीना : इसका मतलब यह हुआ कि पानी जिसे हम इतना बेकार करती हैं, वह तो बहुत कीमती चीज़ है।

चंचल : और क्या। पानी तो अमृत है। पानी की हर बूंद गंगाजल है। इसे तो बचाकर रखना चाहिये। आओ हम सब यह प्रण करें कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिये पानी बचायेंगे तथा पेड़ लगायेंगे।

सुमित्रा : (शंकुतला से) बहन जी, आपकी यह बेटी तो बहुत स्यानी है।

शकुंतला : आप सब तो मेरी छोटी बहन या बेटियों की तरह हैं इस पुण्य के काम को अब आप लोग ही करोगे। अच्छा, बहनों बैठो, कीर्तन के बाद प्रसाद लेकर ही घर जाना, पानी की बचत का संदेश भी घर ले जाना।

संपर्क करें:
प्रो. श्यामलाल कौशल
म.नं. 975-बी/20
ग्रीन रोड़ रोहतक (हरियाणा)
पिन-124 001
मो.न. 9416359045
ईमेलः prof.s.l.kaushal@gmail.com